शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 238-241
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

अभय सुकुट डुँगडुँग
सहायक प्राध्यपक, संत जेवियर महाविद्यालय, महुआडॉड़.

Corresponding Author :

अभय सुकुट डुँगडुँग
सहायक प्राध्यपक, संत जेवियर महाविद्यालय, महुआडॉड़.

ध्वनि विज्ञान में बालाघात और अर्थ परिवर्तन की अवधारणा

जीव जगत में विशेष कर मानव जिन ध्वनि-संकेतों को विचार-विनिमय के लिए अपनाते हैं, उसे 'भाषा' कहते हैं। "भाषा व्यक्त ध्वनि-चिह्नों की उस पद्धति को कहते हैं, जिसके माध्यम से प्रत्येक समाज के दल एवं संस्कृति के मानने वाले सदस्य परस्परिक विचार विनिमय किया करते हैं।"[1] मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर समाज के आचार, विचार, व्यवहार, संबंध, प्रभाव से विभिन्न ध्वनि-शब्दों को उत्पन्न तथा विकसित करता है। यह अनुकरणीय ध्वनि- संकेत उच्चारण उपयोगी अवयवों द्वारा वर्ण या शब्दों से भाव अभिव्यक्त करते हैं। मानव के अतिरिक्त ध्वनि-संकेतों का उपयोग पशु-पक्षी,जीव-जन्तु अपने विविध भावों को मुख निस्सृत ध्वनि-संकेत से अभिव्यक्त करते हैं। यह मुख निस्सृत ध्वनि उच्चारण समानता के कारण 'बोली' के दायरे में आता है। बोली के 'बोल' उच्चारण लगभग समान होता है। बोली का क्षेत्र सीमित होता है।

"भाषा का आरंभ ध्वनि से होता है"।[2] ध्वनि प्रतीकों का समूह भाषा है। व्यक्ति इन ध्वनि-प्रतीकों को अपने पूर्वजों एवं समाज द्वारा अर्थ ग्रहण करता एवं विकसित करता है। परिवर्तन इस सृष्टि का नियम है। सृष्टि जगत में प्रत्येक वस्तु परिवर्तित होती रही है। भाषा भी इस नियम से स्वयं को रोक नहीं पाया। भाषा परिवर्तन प्रभाव सामान्यतः ध्वनि, शब्द, रुप, वाक्य तथा अर्थ पर पड़ता है। भाषा परिवर्तन को धर्म, राजनीति, जलवायु, समाज, साहित्य, विज्ञान और व्यक्ति स्वयं प्रभावित करते हैं। "शब्द में जब एक ध्वनि के स्थान पर दूसरी ध्वनि आ जाती है, तब इसे ध्वनि परिवर्तन की संज्ञा दी जाती है।"[3] वर्णों तथा शब्दों के ध्वनि परिवर्तन में अशिक्षा, प्रयत्न-लाघव, अभ्यास, भौगोलिकता, शारीरिक अक्षमता, भाषा-विस्तार, भाषा-संकुचन, क्षेत्रीय बोली, बहुभाषी प्रभाव आदि कारण होते हैं। जैसे 'पॉकेट' को 'पाकिट', 'अमरुद' को 'अमदूर', 'मास्टर' को 'माटर', 'अजय' को 'अजे' बोलना इत्यादि। ध्वनि परिवर्तन में भौगोलिक वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है। कई देशों में हिन्दी के दन्त्य वर्ग के वर्ण त,थ, द और ध को

स्पष्ट उच्चारण में बाधा होती है जैसे 'तोता' को 'टोटा', 'तुम' को 'टुम', 'कैसा' को 'कईसा' आदि। भारतीय भाषा प्राचीन काल से ही किसी न किसी विदेशी भाषाओं के संपर्क में रहा है। समय-समय पर यूनानी, इब्रानी, जापानी, चीनी, तुर्की, अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा पुर्तगाली आदि भाषाओं से मिलती-जुलती शब्द लिये हैं। जिससे ध्वनि परिवर्तन हुआ है। जैसे 'हॉस्पिटल' से 'अस्पताल', 'कैप्टन' से 'कप्तान', 'ऑगस्ट' से 'अगस्त', 'ट्रेजेडी' से 'त्रासदी', 'कॉमेडी' से 'कौमुदी', 'एकेडमी' से 'अकादमी' इत्यादि।

"जब किसी ध्वनि पर विशेष बल या जोर देकर उसका उच्चारण किया जाता है तब उसे आघात कहते हैं।"[4] जब ध्वनि पर धक्का लगता है तब ध्वनि में कंपन होती है। ध्वनि कंपन से ध्वनि लहरें बनती है। जैसे 'गंवार' शब्द में दूसरा अक्षर बलाघात है। जलज, आलय, गगन, अनुभव, अध्यापक, दिशा, परिवार, संस्कृति, प्रशासनिक आदि बलाघात शब्दों के उदाहरण है। "बालाघात में किसी ध्वनि पर हो श्वास वायु का विशेष धक्का देकर उच्चारण करते हैं।"[5] जिससे ध्वनि, अक्षर, शब्द, वाक्य के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है। प्रायः आश्चर्य, भावावेश, आज्ञा या प्रश्नवाचक शब्दों और वाक्यों में यह प्रक्रिया होती है। बालाघात में शिखर और गह्वर दो अवधारणाएं होती है। जिस अक्षर, शब्द या वाक्य में अधिक बल लगता है तो 'शिखर' एवं कम बल वाले को 'गह्वर' कहा जाता है।

ध्वनि बलाघात - जब बल किसी एक 'ध्वनि-वर्ण' पर पड़े। जैसे

'जलज' में ज-लज (बलयुक्त='लज')

'गगन' में ग-गन (बलयुक्त='गन')

'नदी' में न-दी (बलयुक्त='दी')

'संस्कृति' में सं-स्कृ-ति (बलयुक्त=स्कृ)

विद्यालय में वि-द्या-लय (बलयुक्त=द्या)

अक्षर बलाघात - जब बल शब्द के किसी एक 'अक्षर' पर पड़े। जैसे

मकान में म-का-न ('का' में बल)

पहाड़ में प-हाड़ ('हाड़' में बल)

किताब में कि-ताब ('ताब' में बल)

शब्द बलाघात - जब बल किसी वाक्य के 'शब्द' पर पड़े। जैसे - 'मोहन बाजार गया।'

यदि 'मोहन' शब्द में बल देने पर (कौन गया?)

'बाजार' में बल देने पर (कहां गया)

'गया' में बल देने पर (क्या किया) ।

वाक्य बलाघात - जब वाक्य में किसी 'शब्द विशेष' पर अधिक बल पड़े तो अर्थ में विशेषता आ जाती है। जैसे - 'मोहन रॉची गया।'

प्रथम अर्थ में 'कोई और नहीं, मोहन गया।'

द्वितीय अर्थ में 'कहीं और नहीं, राँची गया।'

तृतीय अर्थ में 'जाने की क्रिया' पर जोर दिया गया है।

"भाषा की कोई भी ध्वनि पूर्णता बालाघात शून्य नहीं होती।"[6] भाषा के प्रत्येक ध्वनियों के उच्चारण में बल लगता है। बलाघात अभाव में ध्वनियों का उच्चारण की संभावना नहीं रहती है। व्यावहारिक रूप में जिन ध्वनियों, अक्षरों या शब्दों में बलाघात शून्य समझते हैं वहां अपेक्षाकृत कम बलाघात होता है। अतः सभी भाषा ध्वनियों में किसी न किसी अंश पर बलाघात अवश्य पड़ती है। जैसे

'कमल' शब्द में क-म-ल

“क” (पहले अक्षर) पर हल्का बलाघात है। शेष स्वर (ध्वनि) छोटे हैं, इसलिए बलाघात बहुत तीव्र नहीं है।

"बलाघात उच्चारण शक्ति की वह मात्रा है जिससे किसी भाषिक इकाई (ध्वनि, अक्षर, शब्द, वाक्यांश, वाक्य) का उच्चारण किया जाता है तथा जो उच्चारण के लिए भी भीतर से आई हुई हवा की तीव्रता एवं उच्चारण से संबद्ध मांसपेशियों की दृढ़ता पर निर्भर करती है।"[7] जिससे उच्चारण अंगों में सक्रियता आ जाती है। मांसपेशियों की मजबूती से ध्वनि स्पष्ट और जोरदार बनती है। ध्वनि बलाघात से गति, यति, प्रवाह, सुर लहर, अवधि आदि द्वारा अर्थ निर्धारण किया जाता है। जैसे

'मोहन राँची गया।' - (सामान्य कथन)

'मोहन राँची गया?' - (प्रश्नवाचक कथन)

'मोहन राँची गया!' - (आश्चर्य कथन)

"बलाघात के कारण ध्वनि परिवर्तन हो जाता है किसी ध्वनि पर बल देने में श्वास का अधिक भाग उसी के उच्चारण में व्यय करना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि आसपास की ध्वनियां कमजोर पड़ जाती है और धीरे-धीरे उनका लोप हो जाता है।"[8] जैसे अभ्यंतर से 'भीतर', अलावु से 'लाऊ' (लौकी), अनाज से 'नाज', डाइरेक्टर से 'डिरेक्टर', फाइनेंस से 'फिनेंस' जैसे शब्द घिसकर कालांतर में परिवर्तित हो गए।

"मनुष्य के प्रारंभिक शब्द अनुकरणात्मक थे।" [9] अनुकरण द्वारा भाषा सीखी जाती है। मनुष्य पशु-पक्षियों की बोली सुनकर अनुकरण कर नया शब्द बना लेता है। जैसे 'का- का' के रटने से 'काक', ऐसे ही 'कूक', 'हिनहिनाना', 'भौं-भौं', 'म्याऊं- म्याऊं' इत्यादि। किन्तु यह अनुकरण हमेशा पूर्ण नहीं होता। अपूर्ण अनुकरण ध्वनि परिवर्तन को जन्म देता है। जैसे कोई बच्चा सुनता है 'रुपया', किन्तु अनुकरण से 'लुपया', ठीक इसी तरह 'डाइरेक्ट' को 'डाइलेक्ट' 'सिग्नल' को 'सिंगल' इत्यादि। कई बार ध्वनियों के उचित अनुकरण अभाव में अर्थ का अनर्थ हो जाता है, और अलग-अलग अर्थ को जन्म देता है। कोश विज्ञान में 'सिग्नल' एवं 'सिंगल' के अलग-अलग अर्थ हैं।

जैसे-'लाल सिग्नल(संकेत)पर गाड़ी रोकनी चाहिए।'

'मेरे पास सिंगल (एक) टिकट है।'

"अनुनासिकता के कारण भी शब्दों में अर्थ भेद हो जाता है।"[10] अनुनासिकता बलाघात को प्रभावित नहीं करता है। बलाघात उच्चारण की वह विशेषता है जिसमें किसी एक अक्षर, शब्द या वाक्य पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। हिंदी भाषा में सामान्यतः प्रारंभिक अक्षर या दीर्घ स्वर वाले अक्षर पर बलाघात देखा जाता है क्योंकि वे अन्य अक्षरों की तुलना में अधिक प्रभावशाली, ध्यान आकर्षण और उच्चारण में प्रमुख होते हैं। अनुनासिकता अर्थ भेद को स्पष्ट करता है।जैसे

सास – 'पति की माँ'।

साँस – 'प्राणवायु' ।

गोद – 'वह भाग जहाँ बच्चा बैठाया जाता है'।

गोंद – 'चिपकाने वाला पदार्थ'।

सवार – 'किसी वाहन या जानवर पर चढ़ा हुआ व्यक्ति'।

सँवार- 'सजाना, ठीक करना, सुधारना'।

हंस – 'एक सुंदर सफेद पक्षी'।

हँस – 'मुस्कुराना या हँसी करना (क्रिया)'।

निष्कर्ष - ध्वनि भाषा की मूल इकाई है और उसी के आधार पर भाषा का निर्माण, विकास तथा संप्रेषण संभव होता है। भाषा एक गतिशील एवं परिवर्तनशील प्रणाली है, जो समय, समाज, संस्कृति, भौगोलिक परिस्थिति और अन्य भाषाओं के संपर्क से निरंतर परिवर्तित होती रहती है। इस प्रक्रिया में ध्वनि परिवर्तन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसके कारण शब्दों के रुप और अर्थ में बदलाव आता है।बलाघात उच्चारण की वह शक्ति है जो

ध्वनि, अक्षर, शब्द और वाक्य को विशेष प्रभाव, स्पष्टता और भावात्मकता प्रदान करती है। वाक्य में बलाघात के स्थान परिवर्तन से अर्थ की दिशा बदल जाती है और संप्रेषण अधिक सटीक एवं प्रभावी बनता है।

संदर्भ :

1. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना एवं डॉ उदय प्रताप सिंह भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, मीनाक्षी प्रकाशन-बेगम ब्रिज, मेरठ, पृष्ठ -25
2. आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एवं दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, प्रकाशक - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002, पृष्ठ - 189
3. डॉ श्याम सुंदर दास, भाषा विज्ञान, प्रकाशक-प्रकाशक संस्थान 4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृष्ठ - 51
4. डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना एवं डॉ उदय प्रताप सिंह भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा, मीनाक्षी प्रकाशन-बेगम ब्रिज, मेरठ, पृष्ठ - 167
5. आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एवं दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, प्रकाशक - राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली -110002, पृष्ठ - 203
6. डॉ भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान,प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ - 325
7. डॉ भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान,प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ - 329
8. डॉ भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान,प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ - 347
9. डॉ श्याम सुंदर दास, भाषा विज्ञान, प्रकाशक-प्रकाशक संस्थान 4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002, पृष्ठ - 37
10. डॉ राम छबीला त्रिपाठी, भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा, प्रकाशक- किताब महल 22 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद, पृष्ठ - 79

•